

II-213

पठति॥ॐ विष्णुं प्रणिगृह्णामि॥ॐ वः
 विष्णुमिह नमामा नानामुद्ययामितसूर्यः
 ॥ॐ मंतमहि॥ विष्णुमिह माकध्वनि
 दासति॥ॐ स्वाहा सूर्यस्य नमः प्रवृद्धिः
 वनयन्ति सूर्यस्य ह वानका नमिह
 क्षीतनिर्भूमयनमाः सर्वं पविहृदिन
 मवेगनयीति तस्मादाह स्वाहा सूर्यस्य
 नमः प्रवृद्धि वनयन्ति वनयन्ति स्वाहा
 कारकनाति यत्रादवनामवसावर्वः
 धूः॥ प्रकश्रसर्न पुनत्रकयादासनं॥
 ॥स्वसूत्रगयाईददन्॥ॐ यायं यायं
 यं यतिगृह्णामि॥ॐ अथ यजनंददातिः
 कल्याणमवेगनाध्वनिनध्वनियं या
 यमिनियादाहा० धृष्टं पुरुनत्तुनन
 ॥स्वयं यव नमः यो नदि तथा नारायणं
 हवति॥ ॥जामावह॥ॐ यायं यतिगृ
 ह्णामि॥ॐ विनाजाहाहासि विनाजाहाह
 मासिराधमयियायाये विनाजाहाह॥ॐ

विनाजानमनददवाननाब्धकानाः
 हकानामहिरूपाक्षयनयथायेनाः
 भननाचक्षुनानाननसूपावरुनाथः
 लाकंयुधनवपनाशसुनहिननाशा
 निमसिहस्यसाविनाजानामाकूर्वतना
 नानसूपावरुननसादधदधदकाड
 यधायताकंयुधयाहिमनयननदना
 विनाजं कूं मंधूद्याश्रुक्षीयमानाब्धिन
 दनाः कामधूद्याश्रुक्षीयमानाः कूरुनः
 ॥स्वसूत्रगयादयुक्तात्य॥ ॥गूक्षीश्रु
 चमनी॥जामागा॥ ॥स्वसूत्रगयादयं
 दन्॥ ॥ॐ अर्धो अर्धो अर्धो अर्धो
 निगृह्णामि॥ॐ नदवाव नृध अर्धो म
 नययद्यं यन्मानुषोषं नवृद्धं जहृ कल
 वायीति तस्मान्नायविषयन्॥ ॥जाम
 नदय०ति॥ॐ अर्धं यतिगृह्णामि॥ॐ
 आपसूयूषाहिः सर्वान् कामानवायूः
 यात्॥ॐ अथ स्वाहायावे सर्वं द

वानामायनीरुनसर्वोहिनवेनदवत
हियअनियकिञ्चविदृधंयक्रुसा॥ ॥
नयसूमीनिधाययतिमनु॥ ॐ समुद्रं
१यदिनामितिस्वांथानिमलिगच्छति। अ
निष्ठास्माकंवीनामापयाससिमर्थयन
॥ ॐ समुद्रायत्वावागायत्वाहृत्ययं वसे
मूदयायंयवननगस्मादसमुद्रात्सर्वय
वा१सर्वोहिरुगानिसमुद्रवदन्ति। नस्मा
दवेनंइहातिनस्मादादसमुद्रायत्वा
वागायत्वाह॥ ॥**हस्तप्रकाश॥** ॥
सप्तमंभाषेमनदयन॥ ॐ आचमनीय
माचमनीयमाचमनीयं आचमनंयति
गृह्णातीति॥ ॐ अथयुदगुवतिसन्नायर्ज
मानामनुययुदकंयासयतिनस्मादाह
युदकुरुतिवे॥ ॥**जामागवयति॥** ॥
ॐ आचमनीयंयतिगृह्णाति॥ ॐ आमा
गम्यस्वसास०गृजवव्वसारुमाकूत्रयि
ययुजानामक्षियतिपगूनामविष्टंननु
ना॥ ॐ अथस्यामनिय३आनासु०य

वयक्रुसायामावेनदागिष३आनासुन
नास्मादिय०सर्वो१समर्द्धयति॥ ॥
सप्तमंभाषेमधूयकयदानं॥ ॐ मधू
यकोमधूयकोमधूयको१मधूयको
यतिगृह्णातीति॥ ॥ ॐ दधिमधूयन०
स०सुक्कानत्रहिगनडातनू०
या०यासयतिमधूमाधीस्यामिति
दध्महंस्यामाथवृष्णेमधूनामवम
नमववावदनया१यिर्यधमदवे
वननो। यगच्छतिनस्मादाहमधू
माधीस्यामधूमाधीस्यामिति॥ ॥
जामागवयति॥ ॐ मधूयकोयतिगृ
ह्णाति॥ ॐ मित्रस्यत्वावदूपायति॥
॥ **विद्वंसाय॥** ॐ सुधदायव्यादि
तिनागुतिनाहिनमिवास्तिदवसम
विद्वंसाधियरा३००तिदवमवासेम
विगात्रमधियतिंकवादिनासु०
प्रकृसासहयेष्टदुर्मदा३००तिव
दूयवानमधरुनथवदूपायति॥

वाग्

अनां॥ॐ॥ अथ गमा क्रय निज यन नग
रु स्य सं य निज न क दि न न हि स न स थ
ही नि क दि नो न दि नी हि न ॥ ४ स न स
नी हि नो न थ वे ना द य नि ना ना सा व
अ सा व ही नि हि ॥ ॥ ज मा अ व य ० नि
॥ॐ॥ गं य नि गृ क्ता नि ॥ॐ॥ मा ना नू द्वा र्णाः
दू हि ना व सू ना ५ स सा दि त्या ना म मृ न
स ना हि १ य धू वा र्त्ता ति कि रु ख ज ना यः
मा ग म ना ग म दि निं व धि ४ ४ म म वाः
मू षा व या य मा न ० ह ना मी नि य शा ल रु
ना थ य य ति सृ ज न म वा मू षा व या य मा
रु ग ॥ ॥ अ मू क ॥ अ मू क ना म गः
म (६) या य मा रु ग ॥ॐ॥ मू सृ क रु रु ० न य
लि नि कृ या न ल वा मा ० सा ३ र्थ ४ सा द धि
य क म धि वि वा रुं कू न र थ व कृ या य
या स रु स म स न स सा म य क न कृ नाः
द्या न व न या य क यू ना कृ ना द्या र्त्ता नि
धू न ॥ॐ॥ सा हा नू द्वा य नू द कृ न य नू य
कू ल व द कि (६) क मा न ४ य नि कृ य य
कू नि न ० स ३ रु न ४ ४ ना या ३ ड द ४

नि न स थ य मा अ न स थ व स क्ता या म वेः
न म न दि नि यी ण स थ य न य कृ न ना
सा नू द्वा हि न ग दि नि ॥ ॥ न न स सूः
न हा ज मा ना व म य नि ध नं ॥ ॥ (६)
नि वि य ॥ॐ॥ अ स द्वा ना द व ना ग कृ नः
य द ना ल मा वि ग न ॥ ॥ ज ना ॥ॐ॥ य
क्ष य वी रं ॥ ॥ लं द ॥ॐ॥ य न न्दा य वृ रु
स ति वी स ४ य र्थं द क्ष न मृ नं न न लः
य नि द क्ष मा यू ष दी र्थ य स्या य व ला य
व र्त्ता स ॥ ॥ उ रु वि ॥ॐ॥ य नि ध स्ये य ॥
क्ष स्ये दी र्थ य स्या य क न द क्षि न ग्नि ४ ॥ ४
नं व डी वा मि ग न द ४ यू वी ना य स थ म
हि सं य रि य ॥ ॥ ज स ना ना ॥ॐ॥ य ग सा
मा या वा यृ धि वी य ग स न्दा य वृ रु स ति
४ य ॥ ४ रु ग य मा वि द य स मा ४ य नि य य
नां ॥ ॥ अ वि य ॥ॐ॥ यू वा सू वा सा य निः
धी न आ ग स रु (६) य र्त्ता र व नि जा य मा न
४ ॥ न न धी ना स ४ क व य ड न य नि स्या (६)
म न सा द व य न ४ ॥ॐ॥ अ थ ना वा सा द्वा न
इ हा स थ व स वी नि ४ सं कृ न ४ स न थ व

वामः ४ गमाः ८ गं वासाद्वात्रां याविर्गं स
 (थे वासाय म गं वासाद्वात्रां याविर्गं ॥
 ॥ अलंकृतं नमः ॥ अलंकृतं नमः सिरुया
 लंकृतं नमः ॥ ॥ अलंकृतं नमः ॥
 किष्किना ० सुवर्ण ० दिव्य ० गगनमानं
 वक्रा ० ददाति श्रीसीना वेवक्राय १४५
 यान ० दिव्य ० गगनमानं सुवर्ण ० दिव्य ०
 गगनमानं वक्रा ० ददाति ० ॥ ॥ वक्र
 ॥ अलंकृतं नमः ॥ अलंकृतं नमः ॥
 दर्शनं रुवर्णियत्रमा श्री ॥ अलंकृतं नमः ॥
 गगनमानं सुवर्णियत्रमा श्री ॥ अलंकृतं नमः ॥
 अलंकृतं नमः ॥ अलंकृतं नमः ॥
 रुवर्णियत्रमा श्री ॥ अलंकृतं नमः ॥
 वक्रियि ० ॥ ॥ अलंकृतं नमः ॥
 दा ॥ ॥ अलंकृतं नमः ॥
 मदन ० अलंकृतं नमः ॥
 रुं यनि गृह्णामि यगसावरुणनव ॥ अलंकृतं नमः ॥
 अलंकृतं नमः ॥ अलंकृतं नमः ॥
 माया ० अलंकृतं नमः ॥
 लं रुलानि रुलानां पूरुष ० पूरुष ०

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

[illegible]

ममर्नकादकवायाचिरी वागर्द्धकरु नागनी छिमिहनीदुर्नेम्यदापापदं ॥ प्रकुप्याह नरीधुमि
करदीकामाग्निमीदी यनीता म्बुलस्यसद्वयथादशुल्लक्ष्म ॥ १७ ॥ अर्द्धदान
ववे विक्षमिनि जुवाद्यर्द्धहृदस्याहनी यदिकरागीतं स्मदहृदारादं समन्मीति ॥ गीम
मागदमन्मदीनाकला सया विषयः क्रातर्मे सर्वे क्लमधीधनत्वमगम त्यीमीति ॥ सि
तानम ॥ १८ ॥ वसिश्मिर्मेदवमाका र्कयसिमेनकि र्मीति ॥ १९ ॥ मजाति निधि ला यर्कहृमे कोत
नेमयेत ॥ १८ ॥ क्कानेयधर्मे नवलपुष्प नैरुभनकि तः कापुनधं पिदीनः ॥ २० ॥ जातमिधसय
नवपुसादीक (धु) र्हि गागर्क मिश्र लया (६१॥ १७ ॥ पाजायते विषयः (६१॥ १७ ॥ धनयन्नगयाभ्य
। रुक्षान्निष्ठवर्गदीदीना निष्ठवर्ग विषय ॥ २० ॥ राजदानरामकार्निनिःस्रवकिसेनकिच ॥ २१
धकादाः नराः सर्वे (मद) ददहि नलुवत ॥ २१ ॥ विष्का (मव) महादवी नान्नाचय निवविष्ठा ।
पुण्योऽरु नन्द हिमगद विनेभा मुने ॥ २२ ॥ शकुवात्रयिर्जुलं नक्रननु च्छुण्डीसुश्याग
यना (अथ) निहिता क्क्षानममथाद (लु) न (मग) दं ॥ २३ ॥ व्याधिर्मे वज्रसंहरं विविधे म्मेज
सया (ग) हिंसे सर्वे म्मेधम किं म्मेधम विहिनी म्मेधस्य ना र्क्यो धर्म ॥ २३ ॥ सा (ग) माग रयीक
मेधुन रयी विरुत्तया लाहरी मार्या दे न्यरयी वधे निपु र्मे नृपजनाया रयी ॥ २४ ॥ म्मेधवा

= एतलदं नवेधे म्मे ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

अर्द्धाधिकार
कोवर्धेयः क्काने

एयं शु (अथ) नरा रयीका रयी क्काना नदयी सर्वे क्काने रया चि र्मे नु वि नृगर्मे व नराय मवा रयी ॥ २५ ॥ ग
र्कोसमदानम अ सि गायं चाटकप कीया कर्ने गायी ॥ देववभ्रयादि पशुमवागः कर्त्तव्यं का र्द्धक
वज्रसेयागः ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

